



Mubeen saudagar

28 Jul 1982

10:00 AM

Chichli

Model: Web-MyKundli

Order No: 120337001

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 28/07/1982  
दिन \_\_\_\_\_: बुधवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 10:00:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 10:40:33 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Chichli  
राज्य \_\_\_\_\_: Madhya Pradesh  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 22:48:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 78:52:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:14:32 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 09:45:28 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:06:27 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 06:07:33 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 05:43:46 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:57:53 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 13:14:07 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: वर्षा  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 11:10:40 कर्क  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 08:07:40 कन्या

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: कन्या - बुध  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: तुला - शुक्र  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: स्वाति - 3  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: राहु  
योग \_\_\_\_\_: शुभ  
करण \_\_\_\_\_: बव  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: महिष  
नाड़ी \_\_\_\_\_: अन्त्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: शूद्र  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: मृग  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: वायु  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: रो-रोहित  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: रजत - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: सिंह



## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_:  
पिता का नाम \_\_\_\_\_:  
माता का नाम \_\_\_\_\_:  
जाति \_\_\_\_\_:  
गोत्र \_\_\_\_\_:

| कैलेंडर    | वर्ष          | मास    | तिथि/प्रविष्टे |
|------------|---------------|--------|----------------|
| राष्ट्रीय  | शक : 1904     | श्रावण | 6              |
| पंजाबी     | संवत : 2039   | श्रावण | 13             |
| बंगाली     | सन् : 1389    | श्रावण | 12             |
| तमिल       | संवत : 2039   | आदी    | 13             |
| केरल       | कोल्लम : 1157 | कर्कदम | 12             |
| नेपाली     | संवत : 2039   | श्रावण | 13             |
| चैत्रादि   | संवत : 2039   | श्रावण | शुक्ल 8        |
| कार्तिकादि | संवत : 2039   | श्रावण | शुक्ल 8        |

### पंचांग

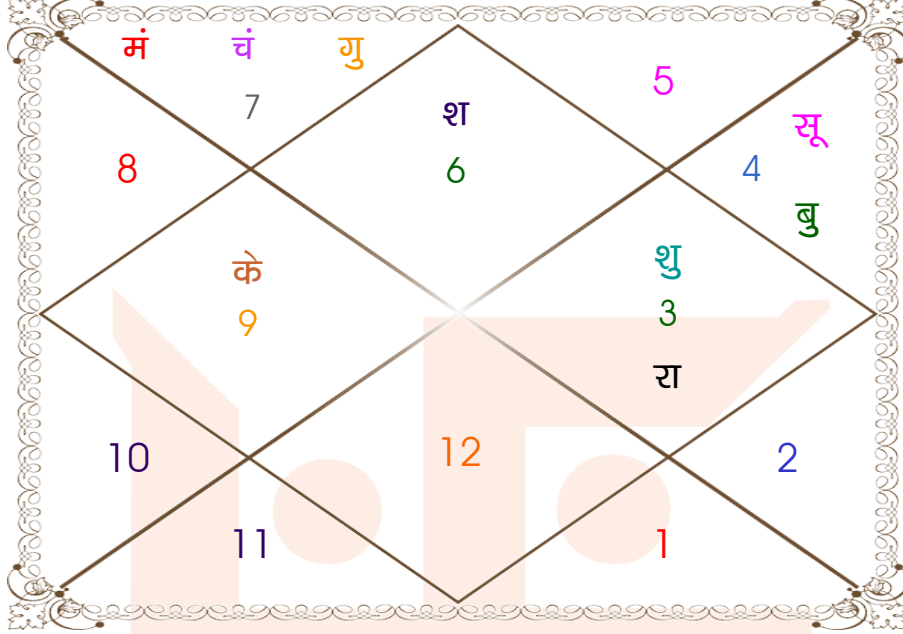
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_: 8  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_: 12:27:07  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 8  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_: स्वाति  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_: 17:46:31 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_: स्वाति  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_: शुभ  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_: 27:13:17 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_: शुभ  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_: बव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_: 12:27:07 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_: बव  
भयात \_\_\_\_\_: 45:01:17  
भभोग \_\_\_\_\_: 64:27:35  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_: राहु 5 वर्ष 4 मा 16 दि

### घात चक्र

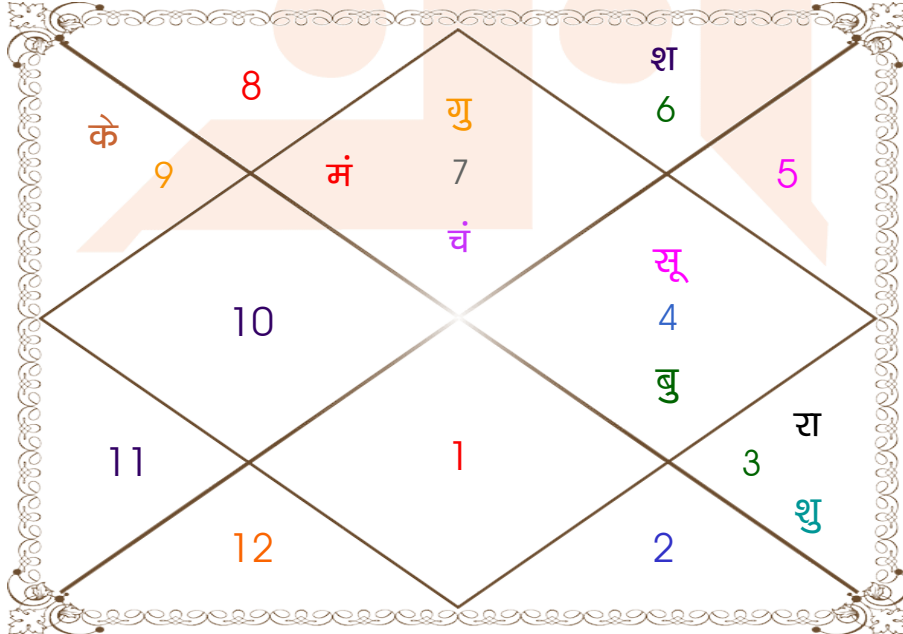
मास \_\_\_\_\_: माघ  
तिथि \_\_\_\_\_: 4-9-14  
दिन \_\_\_\_\_: गुरुवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_: शतभिषा  
योग \_\_\_\_\_: शुक्ल  
करण \_\_\_\_\_: तैतिल  
प्रहर \_\_\_\_\_: 4  
वर्ग \_\_\_\_\_: सिंह  
लग्न \_\_\_\_\_: कन्या  
सूर्य \_\_\_\_\_: कन्या  
चन्द्र \_\_\_\_\_: धनु  
मंगल \_\_\_\_\_: तुला  
बुध \_\_\_\_\_: कर्क  
गुरु \_\_\_\_\_: वृश्चिक  
शुक्र \_\_\_\_\_: धनु  
शनि \_\_\_\_\_: सिंह  
राहु \_\_\_\_\_: मकर

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुंडली



## चन्द्र कुंडली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

|    |  |                |          |
|----|--|----------------|----------|
|    |  |                | शु<br>रा |
|    |  |                | बु<br>सू |
|    |  |                |          |
| के |  | गु<br>चं<br>मं | श<br>ल   |

### लग्न कुंडली

|          |                |  |    |
|----------|----------------|--|----|
| रा<br>शु |                |  |    |
| बु<br>सू |                |  |    |
|          |                |  |    |
| ल<br>श   | मं<br>चं<br>गु |  | के |

विंशोत्तरी  
राहु 5वर्ष 4मा 16दि  
राहु

28/07/1982

13/12/2089

|        |            |
|--------|------------|
| राहु   | 14/12/1987 |
| गुरु   | 14/12/2003 |
| शनि    | 13/12/2022 |
| बुध    | 14/12/2039 |
| केतु   | 13/12/2046 |
| शुक्र  | 13/12/2066 |
| सूर्य  | 13/12/2072 |
| चन्द्र | 13/12/2082 |
| मंगल   | 13/12/2089 |

योगिनी  
पिंगला 0वर्ष 7मा 5दि  
भामरी

03/03/2022

03/03/2026

|         |            |
|---------|------------|
| भामरी   | 12/08/2022 |
| भद्रिका | 03/03/2023 |
| उत्का   | 02/11/2023 |
| सिद्धा  | 12/08/2024 |
| संकटा   | 02/07/2025 |
| मंगला   | 12/08/2025 |
| पिंगला  | 01/11/2025 |
| धान्या  | 03/03/2026 |

Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com



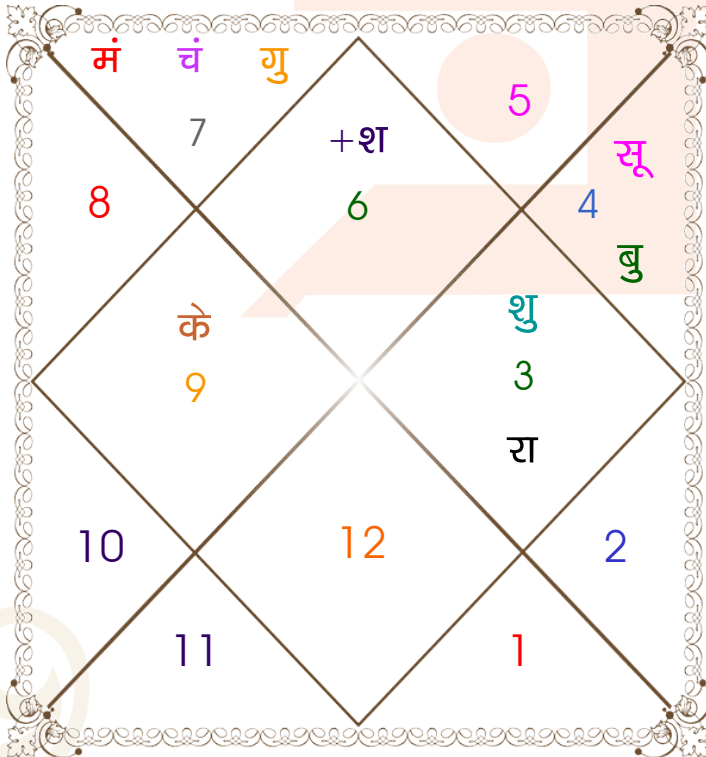
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह    | व अ राशि | अंश      | गति       | नक्षत्र    | पद | नं. | रा    | न     | अं.   | स्थिति     |
|---------|----------|----------|-----------|------------|----|-----|-------|-------|-------|------------|
| लग्न    | कन्या    | 08:07:40 | 332:45:54 | उ०फाल्गुनी | 4  | 12  | बुध   | सूर्य | शुक्र | ---        |
| सूर्य   | कर्क     | 11:10:40 | 00:57:21  | पुष्य      | 3  | 8   | चंद्र | शनि   | चंद्र | मित्र राशि |
| चंद्र   | तुला     | 16:00:57 | 12:20:38  | स्वाति     | 3  | 15  | शुक्र | राहु  | शुक्र | सम राशि    |
| मंगल    | तुला     | 02:51:45 | 00:32:59  | चित्रा     | 3  | 14  | शुक्र | मंगल  | शुक्र | सम राशि    |
| बुध     | अ कर्क   | 14:24:09 | 02:03:55  | पुष्य      | 4  | 8   | चंद्र | शनि   | राहु  | शत्रु राशि |
| गुरु    | तुला     | 08:10:15 | 00:05:10  | स्वाति     | 1  | 15  | शुक्र | राहु  | राहु  | शत्रु राशि |
| शुक्र   | मिथु     | 15:25:50 | 01:12:25  | आर्द्रा    | 3  | 6   | बुध   | राहु  | शुक्र | मित्र राशि |
| शनि     | कन्या    | 23:09:59 | 00:03:44  | हस्त       | 4  | 13  | बुध   | चंद्र | सूर्य | मित्र राशि |
| राहु    | मिथु     | 19:33:24 | 00:00:07  | आर्द्रा    | 4  | 6   | बुध   | राहु  | मंगल  | उच्च राशि  |
| केतु    | धनु      | 19:33:24 | 00:00:07  | पूर्वाषाढा | 2  | 20  | गुरु  | शुक्र | राहु  | उच्च राशि  |
| हर्ष    | व वृश्चि | 07:01:47 | 00:00:37  | अनुराधा    | 2  | 17  | मंगल  | शनि   | बुध   | ---        |
| नेप     | व धनु    | 01:03:51 | 00:01:08  | मूल        | 1  | 19  | गुरु  | केतु  | शुक्र | ---        |
| प्लूटो  | तुला     | 00:39:50 | 00:00:48  | चित्रा     | 3  | 14  | शुक्र | मंगल  | बुध   | ---        |
| दशम भाव | मिथु     | 08:07:10 | --        | आर्द्रा    | -- | 6   | बुध   | राहु  | राहु  | --         |

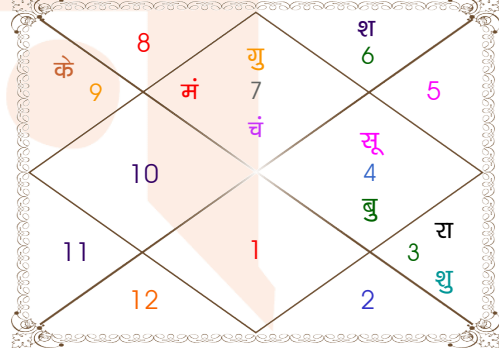
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:36:33

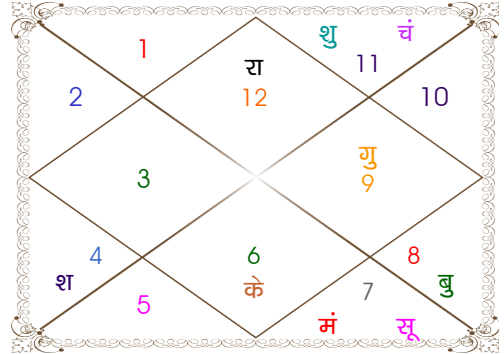
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

| भाव | भाव संधि         | भाव मध्य         |
|-----|------------------|------------------|
| 1   | सिंह 23:07:35    | कन्या 08:07:40   |
| 2   | कन्या 23:07:35   | तुला 08:07:30    |
| 3   | तुला 23:07:25    | वृश्चिक 08:07:20 |
| 4   | वृश्चिक 23:07:15 | धनु 08:07:10     |
| 5   | धनु 23:07:15     | मकर 08:07:20     |
| 6   | मकर 23:07:25     | कुम्भ 08:07:30   |
| 7   | कुम्भ 23:07:35   | मीन 08:07:40     |
| 8   | मीन 23:07:35     | मेष 08:07:30     |
| 9   | मेष 23:07:25     | वृष 08:07:20     |
| 10  | वृष 23:07:15     | मिथुन 08:07:10   |
| 11  | मिथुन 23:07:15   | कर्क 08:07:20    |
| 12  | कर्क 23:07:25    | सिंह 08:07:30    |

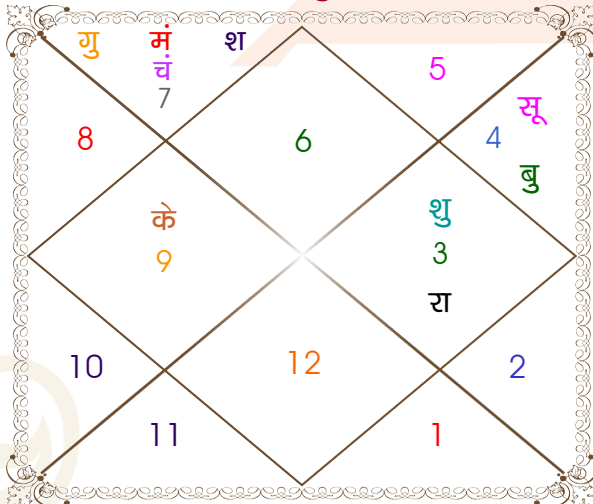
### निरयण भाव चलित

| भाव | राशि             | अंश |
|-----|------------------|-----|
| 1   | कन्या 08:07:40   |     |
| 2   | तुला 07:03:45    |     |
| 3   | वृश्चिक 07:25:13 |     |
| 4   | धनु 08:07:10     |     |
| 5   | मकर 08:52:16     |     |
| 6   | कुम्भ 09:17:11   |     |
| 7   | मीन 08:07:40     |     |
| 8   | मेष 07:03:45     |     |
| 9   | वृष 07:25:13     |     |
| 10  | मिथुन 08:07:10   |     |
| 11  | कर्क 08:52:16    |     |
| 12  | सिंह 09:17:11    |     |

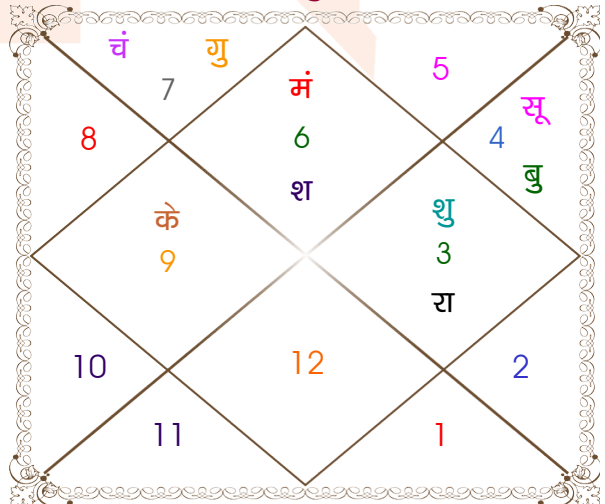
### तारा चक्र

| जन्म    | सम्पत         | विपत      | क्षेम    | प्रत्यारि | साधक           | वध         | मित्र  | अतिमित्र |
|---------|---------------|-----------|----------|-----------|----------------|------------|--------|----------|
| स्वाति  | विशाखा        | अनुराधा   | ज्येष्ठा | मूल       | पूर्वाषाढा     | उत्तराषाढा | श्रवण  | धनिष्ठा  |
| शतभिषा  | पूर्वाभाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती    | अश्विनी   | भरणी           | कृतिका     | रोहिणी | मृगशिरा  |
| आर्द्रा | पुनर्वसु      | पुष्य     | आश्लेषा  | मघा       | पूर्वाफाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त   | चित्रा   |

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली





## विंशोत्तरी दशा

**भोग्य दशा काल : राहु 5 वर्ष 4 मास 16 दिन**

| राहु 18 वर्ष<br>28/07/1982<br>14/12/1987  | गुरु 16 वर्ष<br>14/12/1987<br>14/12/2003 | शनि 19 वर्ष<br>14/12/2003<br>13/12/2022   | बुध 17 वर्ष<br>13/12/2022<br>14/12/2039 | केतु 7 वर्ष<br>14/12/2039<br>13/12/2046  |
|-------------------------------------------|------------------------------------------|-------------------------------------------|-----------------------------------------|------------------------------------------|
| 00/00/0000                                | गुरु 31/01/1990                          | शनि 16/12/2006                            | बुध 11/05/2025                          | केतु 11/05/2040                          |
| 00/00/0000                                | शनि 13/08/1992                           | बुध 25/08/2009                            | केतु 08/05/2026                         | शुक्र 11/07/2041                         |
| 00/00/0000                                | बुध 19/11/1994                           | केतु 04/10/2010                           | शुक्र 08/03/2029                        | सूर्य 16/11/2041                         |
| 00/00/0000                                | केतु 26/10/1995                          | शुक्र 04/12/2013                          | सूर्य 12/01/2030                        | चंद्र 17/06/2042                         |
| 28/07/1982                                | शुक्र 26/06/1998                         | सूर्य 16/11/2014                          | चंद्र 14/06/2031                        | मंगल 13/11/2042                          |
| शुक्र 01/07/1984                          | सूर्य 14/04/1999                         | चंद्र 16/06/2016                          | मंगल 10/06/2032                         | राहु 01/12/2043                          |
| सूर्य 26/05/1985                          | चंद्र 13/08/2000                         | मंगल 26/07/2017                           | राहु 28/12/2034                         | गुरु 06/11/2044                          |
| चंद्र 25/11/1986                          | मंगल 20/07/2001                          | राहु 01/06/2020                           | गुरु 04/04/2037                         | शनि 16/12/2045                           |
| मंगल 14/12/1987                           | राहु 14/12/2003                          | गुरु 13/12/2022                           | शनि 14/12/2039                          | बुध 13/12/2046                           |
| शुक्र 20 वर्ष<br>13/12/2046<br>13/12/2066 | सूर्य 6 वर्ष<br>13/12/2066<br>13/12/2072 | चंद्र 10 वर्ष<br>13/12/2072<br>13/12/2082 | मंगल 7 वर्ष<br>13/12/2082<br>13/12/2089 | राहु 18 वर्ष<br>13/12/2089<br>00/00/0000 |
| शुक्र 14/04/2050                          | सूर्य 02/04/2067                         | चंद्र 13/10/2073                          | मंगल 11/05/2083                         | राहु 25/08/2092                          |
| सूर्य 14/04/2051                          | चंद्र 01/10/2067                         | मंगल 14/05/2074                           | राहु 29/05/2084                         | गुरु 19/01/2095                          |
| चंद्र 13/12/2052                          | मंगल 06/02/2068                          | राहु 13/11/2075                           | गुरु 05/05/2085                         | शनि 25/11/2097                           |
| मंगल 12/02/2054                           | राहु 31/12/2068                          | गुरु 14/03/2077                           | शनि 14/06/2086                          | बुध 14/06/2100                           |
| राहु 12/02/2057                           | गुरु 19/10/2069                          | शनि 13/10/2078                            | बुध 11/06/2087                          | केतु 03/07/2101                          |
| गुरु 14/10/2059                           | शनि 01/10/2070                           | बुध 14/03/2080                            | केतु 07/11/2087                         | शुक्र 29/07/2102                         |
| शनि 13/12/2062                            | बुध 08/08/2071                           | केतु 13/10/2080                           | शुक्र 06/01/2089                        | 00/00/0000                               |
| बुध 13/10/2065                            | केतु 14/12/2071                          | शुक्र 14/06/2082                          | सूर्य 14/05/2089                        | 00/00/0000                               |
| केतु 13/12/2066                           | शुक्र 13/12/2072                         | सूर्य 13/12/2082                          | चंद्र 13/12/2089                        | 00/00/0000                               |

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 5 वर्ष 5 मा 4 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| बुध - केतु<br>11/05/2025<br>08/05/2026                                                                                                                                   | बुध - शुक्र<br>08/05/2026<br>08/03/2029                                                                                                                                  | बुध - सूर्य<br>08/03/2029<br>12/01/2030                                                                                                                                  | बुध - चंद्र<br>12/01/2030<br>14/06/2031                                                                                                                                  | बुध - मंगल<br>14/06/2031<br>10/06/2032                                                                                                                                   |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| केतु 01/06/2025<br>शुक्र 31/07/2025<br>सूर्य 19/08/2025<br>चंद्र 18/09/2025<br>मंगल 09/10/2025<br>राहु 02/12/2025<br>गुरु 19/01/2026<br>शनि 18/03/2026<br>बुध 08/05/2026 | शुक्र 28/10/2026<br>सूर्य 18/12/2026<br>चंद्र 15/03/2027<br>मंगल 14/05/2027<br>राहु 16/10/2027<br>गुरु 02/03/2028<br>शनि 13/08/2028<br>बुध 07/01/2029<br>केतु 08/03/2029 | सूर्य 24/03/2029<br>चंद्र 18/04/2029<br>मंगल 06/05/2029<br>राहु 22/06/2029<br>गुरु 02/08/2029<br>शनि 21/09/2029<br>बुध 04/11/2029<br>केतु 22/11/2029<br>शुक्र 12/01/2030 | चंद्र 25/02/2030<br>मंगल 27/03/2030<br>राहु 12/06/2030<br>गुरु 20/08/2030<br>शनि 10/11/2030<br>बुध 23/01/2031<br>केतु 22/02/2031<br>शुक्र 19/05/2031<br>सूर्य 14/06/2031 | मंगल 05/07/2031<br>राहु 28/08/2031<br>गुरु 16/10/2031<br>शनि 12/12/2031<br>बुध 01/02/2032<br>केतु 22/02/2032<br>शुक्र 23/04/2032<br>सूर्य 11/05/2032<br>चंद्र 10/06/2032 |
| बुध - राहु<br>10/06/2032<br>28/12/2034                                                                                                                                   | बुध - गुरु<br>28/12/2034<br>04/04/2037                                                                                                                                   | बुध - शनि<br>04/04/2037<br>14/12/2039                                                                                                                                    | केतु - केतु<br>14/12/2039<br>11/05/2040                                                                                                                                  | केतु - शुक्र<br>11/05/2040<br>11/07/2041                                                                                                                                 |
| राहु 28/10/2032<br>गुरु 01/03/2033<br>शनि 26/07/2033<br>बुध 05/12/2033<br>केतु 29/01/2034<br>शुक्र 03/07/2034<br>सूर्य 19/08/2034<br>चंद्र 04/11/2034<br>मंगल 28/12/2034 | गुरु 18/04/2035<br>शनि 27/08/2035<br>बुध 22/12/2035<br>केतु 09/02/2036<br>शुक्र 26/06/2036<br>सूर्य 06/08/2036<br>चंद्र 14/10/2036<br>मंगल 01/12/2036<br>राहु 04/04/2037 | शनि 07/09/2037<br>बुध 24/01/2038<br>केतु 23/03/2038<br>शुक्र 03/09/2038<br>सूर्य 22/10/2038<br>चंद्र 12/01/2039<br>मंगल 10/03/2039<br>राहु 04/08/2039<br>गुरु 14/12/2039 | केतु 22/12/2039<br>शुक्र 16/01/2040<br>सूर्य 24/01/2040<br>चंद्र 05/02/2040<br>मंगल 14/02/2040<br>राहु 07/03/2040<br>गुरु 27/03/2040<br>शनि 20/04/2040<br>बुध 11/05/2040 | शुक्र 21/07/2040<br>सूर्य 11/08/2040<br>चंद्र 15/09/2040<br>मंगल 10/10/2040<br>राहु 13/12/2040<br>गुरु 08/02/2041<br>शनि 17/04/2041<br>बुध 16/06/2041<br>केतु 11/07/2041 |
| केतु - सूर्य<br>11/07/2041<br>16/11/2041                                                                                                                                 | केतु - चंद्र<br>16/11/2041<br>17/06/2042                                                                                                                                 | केतु - मंगल<br>17/06/2042<br>13/11/2042                                                                                                                                  | केतु - राहु<br>13/11/2042<br>01/12/2043                                                                                                                                  | केतु - गुरु<br>01/12/2043<br>06/11/2044                                                                                                                                  |
| सूर्य 17/07/2041<br>चंद्र 28/07/2041<br>मंगल 04/08/2041<br>राहु 23/08/2041<br>गुरु 09/09/2041<br>शनि 30/09/2041<br>बुध 18/10/2041<br>केतु 25/10/2041<br>शुक्र 16/11/2041 | चंद्र 03/12/2041<br>मंगल 16/12/2041<br>राहु 17/01/2042<br>गुरु 14/02/2042<br>शनि 20/03/2042<br>बुध 19/04/2042<br>केतु 02/05/2042<br>शुक्र 06/06/2042<br>सूर्य 17/06/2042 | मंगल 25/06/2042<br>राहु 18/07/2042<br>गुरु 07/08/2042<br>शनि 30/08/2042<br>बुध 20/09/2042<br>केतु 29/09/2042<br>शुक्र 24/10/2042<br>सूर्य 31/10/2042<br>चंद्र 13/11/2042 | राहु 09/01/2043<br>गुरु 01/03/2043<br>शनि 01/05/2043<br>बुध 25/06/2043<br>केतु 17/07/2043<br>शुक्र 19/09/2043<br>सूर्य 08/10/2043<br>चंद्र 09/11/2043<br>मंगल 01/12/2043 | गुरु 16/01/2044<br>शनि 10/03/2044<br>बुध 27/04/2044<br>केतु 17/05/2044<br>शुक्र 13/07/2044<br>सूर्य 30/07/2044<br>चंद्र 27/08/2044<br>मंगल 16/09/2044<br>राहु 06/11/2044 |

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

|              |                     |
|--------------|---------------------|
| मूलांक       | 1                   |
| भाग्यांक     | 1                   |
| मित्र अंक    | 1, 4, 8, 9          |
| शत्रु अंक    | 3, 5, 6             |
| शुभ वर्ष     | 19, 28, 37, 46, 55  |
| शुभ दिन      | बुध, शुक्र          |
| शुभ ग्रह     | बुध, शुक्र          |
| मित्र राशि   | मकर, मिथुन          |
| मित्र लग्न   | धनु, वृष, कर्क      |
| अनुकूल देवता | लक्ष्मी             |
| शुभ रत्न     | पन्ना               |
| शुभ उपरत्न   | संगपन्ना, मरगज      |
| भाग्य रत्न   | हीरा                |
| शुभ धातु     | कांसा               |
| शुभ रंग      | हरित                |
| शुभ दिशा     | उत्तर               |
| शुभ समय      | सूर्योदय के बाद     |
| दान पदार्थ   | हाथी दाँत, कपूर, फल |
| दान अन्न     | मूँग                |
| दान द्रव्य   | घी                  |

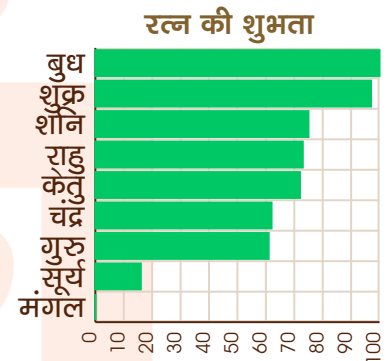


## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न     | ग्रह  | शुभता | क्षेत्र                                   |
|----------|-------|-------|-------------------------------------------|
| पन्ना    | बुध   | 100%  | धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य     |
| हीरा     | शुक्र | 97%   | व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, धन           |
| नीलम     | शनि   | 75%   | स्वास्थ्य, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति |
| गोमेद    | राहु  | 73%   | व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन                |
| लहसुनिया | केतु  | 72%   | सुख, धन                                   |
| मोती     | चंद्र | 62%   | धन, धनार्जन                               |
| पुखराज   | गुरु  | 61%   | धन, सुख, दम्पति                           |
| माणिक्य  | सूर्य | 16%   | हानि, व्यय                                |
| मूंगा    | मंगल  | 0%    | धन हानि, दुर्घटना, पराक्रम हानि           |



### दशानुसार रत्न विचार

| दशा   | समाप्ति    | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|-------|------------|---------|------|-------|-------|--------|------|------|-------|----------|
| राहु  | 14/12/1987 | 0%      | 50%  | 0%    | 100%  | 61%    | 100% | 81%  | 86%   | 59%      |
| गुरु  | 14/12/2003 | 28%     | 69%  | 12%   | 91%   | 73%    | 84%  | 75%  | 73%   | 72%      |
| शनि   | 13/12/2022 | 0%      | 50%  | 0%    | 100%  | 61%    | 100% | 88%  | 80%   | 59%      |
| बुध   | 14/12/2039 | 28%     | 50%  | 0%    | 100%  | 61%    | 100% | 75%  | 73%   | 72%      |
| केतु  | 13/12/2046 | 0%      | 50%  | 12%   | 100%  | 61%    | 100% | 62%  | 61%   | 84%      |
| शुक्र | 13/12/2066 | 0%      | 50%  | 0%    | 100%  | 61%    | 100% | 81%  | 80%   | 78%      |
| सूर्य | 13/12/2072 | 41%     | 69%  | 12%   | 100%  | 67%    | 84%  | 62%  | 61%   | 59%      |
| चंद्र | 13/12/2082 | 28%     | 75%  | 0%    | 100%  | 61%    | 97%  | 75%  | 61%   | 59%      |
| मंगल  | 13/12/2089 | 28%     | 69%  | 25%   | 91%   | 67%    | 97%  | 75%  | 61%   | 78%      |

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

|                        |                                                                   |       |
|------------------------|-------------------------------------------------------------------|-------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 28/07/1982-06/10/1982                                             | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 06/10/1982-21/12/1984 01/06/1985-17/09/1985                       | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 21/12/1984-01/06/1985 17/09/1985-17/12/1987                       | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 21/03/1990-20/06/1990 15/12/1990-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993 | ----- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003                       | ----- |

### द्वितीय चक्र:

|                        |                                             |       |
|------------------------|---------------------------------------------|-------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012 | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023 | ----- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032 | ----- |

### तृतीय चक्र:

|                        |                                                                   |       |
|------------------------|-------------------------------------------------------------------|-------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041 | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046                       | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052                       | ----- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062                       | ----- |

### शनि का ढैया फल

#### ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया  
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया  
साढ़ेसाती तृतीय ढैया  
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया  
अष्टम स्थानस्थ ढैया

#### फल

सम  
शुभ  
सम  
शुभ  
शुभ

#### क्षेत्र

स्वास्थ्य  
धन  
पराक्रम हानि  
सन्तति सुख  
भाग्योदय

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।



## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव उत्पन्न रहेगा। साथ ही मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित मात्रा में विलम्ब भी हो सकता है तथा यदा कदा विवाह संबंधी वार्तालापों में व्यवधान आएंगे परन्तु अन्ततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी। पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक शान्ति भी बनी रहेगी।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही चतुर्थ भाव पर दृष्टि के कारण जीवन में आप भौतिक सुख संसाधन तथा जायदाद आदि भी प्राप्त करेंगे यद्यपि इसमें आपको थोड़ा परिश्रम अवश्य करना पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वभाव से वे तेज हो सकती हैं परन्तु इसमें कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा व्यवधानों एवं समस्याओं का दृढ़ता पूर्वक सामना करके उनका समाधान करेंगे।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय एवं अनुकूल बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाय। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा इच्छित भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी साथ ही चल एवं अचल सम्पत्ति के भी स्वामी बनेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं प्रसन्नता पूर्वक

व्यतीत होगा तथा धनऐश्वर्य से आप युक्त रहेंगे ।



**Meenna Salaria Astro & Numerio**

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि



आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। परिणामस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से अलग रहता है। माता-पिता का स्नेह अधिक नहीं मिलता है। जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर नुकसान पहुँचाते रहते हैं। नाना-नानी या दादा-दादी का प्रायः वियोग होता है। इस योग के प्रभाव से सन्तान कभी अस्वस्थ हो जाते हैं और जातक चिन्ता व परेशानी के घेरे में आ जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को व्यापार व्यवसाय में थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। नौकरी व्यवसाय में भी कभी कुछ व्यवधान उपस्थित हो जाता है पर कालान्तर में वह स्वतः नष्ट हो जाता है। जातक को भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है और सरकारी अधिकारियों से कभी अनबन भी हो जाती है।

इस योग के कारण जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी अशान्त या कष्टमय हो जाता है। घर में सुख-शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। सुख-प्राप्ति के लिए विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है और मित्र गण समय पर धोखा दे जाते हैं। परिणामस्वरूप जातक को आंशिक रूप में नुकसान उठाना पड़ता है। आय में कमी रहती है। फलस्वरूप आर्थिक संकट समय-समय पर घेर लेता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है जिसमें जातक को विशेष रूप से प्रसिद्धि मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।

11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

#### विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुंडली में शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।





## ग्रह फल

### सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

### चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रुग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरे की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

## मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

## बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

## गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

## शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

### शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्ता, ईर्ष्यायुक्त स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

### राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

### केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।



## दशा विश्लेषण

**महादशा :- बुध  
( 13/12/2022 - 14/12/2039 )**

बुध की अन्तर्दशा 13/12/2022 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 14/12/2039 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध एकादश भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण आपको मामूली स्वास्थ्य समस्या तथा साझेदारी में बाधा हुई होगी और विरोधी उत्पन्न हुए होंगे। बुध की वर्तमान दशा में आपको सभी कार्यों में सफलता तथा लाभ मिलेगा और सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी।

**स्वास्थ्य :**

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, स्फूर्तिवान, स्वस्थ तथा शक्तिशाली होंगे। विषाणुजन्य ज्वर तथा संक्रामक बीमारी, चर्मरोग और स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है। स्वयं को अनावश्यक मानसिक या शारीरिक कष्ट न दें। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

**अर्थ और व्यवसाय :**

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपको विभिन्न स्रोतों से धन की प्राप्ति भी होगी। आपको सट्टे तथा अन्य निवेश में लाभ होगा। आप दिन ब दिन तरक्की करेंगे और आपको सभी कार्यों में सफलता तथा लाभ मिलेगा। जीविका और व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को प्रतिस्पर्धा में सफलता और उच्चाधिकारियों या सरकार से लाभ मिलेगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और सहकर्मियों तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा, आय में वृद्धि, व्यापार की उत्तम संभावना तथा जीवन में तरक्की होगी। आर्थिक प्रगति के लिए यह दशा अति उत्तम है।

**वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :**

मंगल की अन्तर्दशा में आपको जीवन का आनन्द और वाहन का सुख मिलेगा। आप गाड़ी की खरीद और विक्री कर सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपको अचल सम्पत्ति का अचानक लाभ मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और चन्द्र की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी जो लाभदायक होगी।

**शिक्षा :**

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। सामूहिक गतिविधियों से आपको लाभ होगा। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य, व्यापार तथा अन्तरराष्ट्रीय व्यापार के विषयों में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक और बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि होगी। आप सभी बौद्धिक कार्यों में बहुत अच्छा

करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा और वे आपकी खुशी के स्रोत होंगे। आपके जीवन साथी को सहे तथा निवेश में लाभ, अचानक धन की प्राप्ति तथा बच्चों से सुख मिलेगा। आपका आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। उन्हें जमीन-जायदाद और सुख की प्राप्ति होगी। आपको पिता की सम्पत्ति की प्राप्ति होगी, उनकी यात्रा होगी और व्यवसाय-व्यापार में सफलता मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को ख्याति, सम्पत्ति और पिता से लाभ मिलेगा। आपके बड़े भाई-बहनों को सुख, यश और ख्याति मिलेगी और उनकी यात्रा होगी। आपके भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपको सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी, आपके मित्र प्रभावशाली होंगे और आपकी मनोकामनाएं पूरी होंगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के कारण आपको लाभ वाहन तथा सुख की प्राप्ति होगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा होगी तथा जीवन में प्रगति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, शक्ति तथा अधिकार मिलेगा और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। राहु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और कुछ परिवर्तन होगा। शनि की अन्तर्दशा में कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

**अंतर्दशा :- बुध - बुध  
( 13/12/2022 - 11/05/2025 )**

आपके लिए बुध की महादशा 13/12/2022 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 13/12/2022 को प्रारंभ होकर 11/05/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा, इच्छाएं पूर्ण होंगी। बहुत मित्र होंगे। बुद्धिमत्ता उत्तम होगी। कल्पनाशक्ति और उत्साह उत्तम होंगे। आविष्कारों और नये कार्यों के लिए उत्तम समय है। ज्ञान-विज्ञान और लेखन में रुचि होगी। दैनिक दिनचर्या की व्यवस्था कुशलता से करेंगे।

आपके जीवनसाथी को निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। आपके पिता की लघु यात्राएं हो सकती हैं; व्यापार से लाभ हो सकता है। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा ; धनागम होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए प्रसिद्धि, सब कार्यों में सफलता, ज्ञान-विज्ञान में रुचि का संकेत है। आपकी संतान को शिक्षा में सफलता मिलेगी; सामूहिक कार्यों में लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार से लाभ होगा या नया व्यापार प्रारंभ कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं को कई माध्यमों से धनागम होगा। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ॐ बुं बुधाय नमः

**अंतर्दशा :- बुध - केतु  
( 11/05/2025 - 08/05/2026 )**

आपके लिए बुध की महादशा 13/12/2022 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 11/05/2025 को प्रारंभ होकर 08/05/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे। घर में हंसी-खुशी का वातावरण रहेगा। माता से संबंध उत्तम रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। पैतृक संपत्ति मिल सकती है। अध्यात्म में रुचि होगी। निवास जन्मस्थान से दूर हो सकता है। जायदाद से अच्छी आय होगी। प्रसिद्धि और लोकप्रियता की संभावना है। कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। अदालत में जीत होगी, व्यापार में लाभ होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।



आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा, धन का संचय होगा। आपकी माता प्रसिद्ध होंगी, धनी बनेंगी, आत्मविश्वास उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, सरकार से लाभ, रिश्तेदारों से अच्छे संबंध, उत्तम स्वास्थ्य, शत्रुओं पर विजय, दृढ़निश्चय और लक्ष्य की प्राप्ति का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, यात्राएं हो सकती हैं, अधिक परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो वातावरण में परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो धन का लाभ होगा। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा, प्रगति अच्छी होगी। व्यापारी धन कमाएंगे, व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती की मामूली व्याधि का इलाज ठीक से करवाएं। शुभत्व में वृद्धि के लिए गणेशजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- बुध - शुक्र  
( 08/05/2026 - 08/03/2029 )**

आपके लिए बुध की महादशा 13/12/2022 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 08/05/2026 को प्रारंभ होकर 08/03/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आपको कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी, स्पर्धियों और विरोधियों पर जीत होगी। कार्यों में सफल होंगे। आय अच्छी होगी, जीवन सुखद और आरामदेह होगा। आपके बहुत से मित्र होंगे, उनसे आपको लाभ होगा। समाज में साख बढ़ेगी, उच्चपद प्राप्त होगा। परिवार में सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। माता से संबंध मधुर रहेंगे। शिक्षा में सफल रहेंगे। परिवारजनों और मित्रों से संबंध अच्छे होंगे। अचल संपत्ति और वाहन प्राप्त कर सकते हैं। बागबानी में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी सौभाग्यशाली रहेंगे, धनी बनेंगे, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता को विभिन्न माध्यमों से लाभ हो सकता है। माता को साझेदारी से लाभ होगा ; व्यापार में फायदा होगा। आपके भाई-बहनों के लिए अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ, सुख-सुविधाएं, यात्रा और खर्च का संकेत है। कुछ बचत भी होगी, शत्रुओं पर विजय होगी।

आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम होगा, स्पर्धा और परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी, आय अच्छी होगी, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे; धनलाभ होगा। व्यापारी पहले किये निवेश से लाभ उठाएंगे; आय अच्छी होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए चावल, श्वेत वस्त्र और दही दान में दें।

**अंतर्दशा :- बुध - सूर्य  
( 08/03/2029 - 12/01/2030 )**

आपके लिए बुध की महादशा 13/12/2022 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 08/03/2029 को प्रारंभ होकर 12/01/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद और सम्मान प्राप्त करेंगे। सफलता और समृद्धि का योग है। घरेलू सुख मिलेगा। बड़े भाई-बहनों से मधुर संबंध रहेंगे। महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मित्रता हो सकती है। संतान से सुख मिलेगा। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शिक्षा उत्तम रहेगी, अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को भागीदारी से लाभ होगा, इच्छाएं पूर्ण होंगी, व्यापार में लाभ होगा, यात्रा हो सकती है। आपके पिता को धनार्जन होगा, सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी, साहित्य से लाभ हो सकता है। माता को अचानक धन मिल सकता है, अध्यात्म में रुचि होगी, अचानक कोई घटना घट सकती है।

आपके भाई-बहन भाग्यशाली रहेंगे, धन, पिता से लाभ, धर्म में रुचि, सफलता, प्रगति, उच्चाधिकारियों की प्रसन्नता, सम्मान और उच्चपद का योग है।

आपकी संतान को सफलता मिलेगी, इच्छाएं पूर्ण होंगी, शिक्षा में प्रगति होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं को धनलाभ होगा। व्यापारी खूब पैसा कमाएंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों और नेत्रों में मामूली व्याधि हो सकती है।